प्रस्तावना :

समाज में महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की रही है । इस वर्ण व्यवस्था पर आधारित भारतीय समाज में जाति और जेंडर के आपसी मेल का वर्चस्वशाली पितृसत्तात्मक विमर्श महिलाओं, खासकर दलित महिलाओं के जीवन को और नरकीय बनाता है। भारतीय समाज में दलित जाति व्यवस्था के सबसे निचले सोपान पर स्थित है। शिक्षा, सम्पत्ति आदि तमाम वस्तुओं से वंचित दलित जातियों के पेशे तय है। ऐसा ही एक पेशा सफाई का भंगी जातियों के लिए तय है। यह जाति शौचालय साफ कर रही है, सर पर मैला ढोने जैसा अमानवीय कार्य भी यही जाति करती है। दिलचस्प है कि सर पर मैला ढ़ोने का ज्यादातर कार्य भंगी जाति की महिलायें ही करती है तथा पुरूष बाहरी साफ-सफाई करते है।

जिस तरह से जाति व उस पर आधारित शोषण भारतीय समाज की हकीकत है उसी तरह से महिलाओं का शोषण दुनिया के सारे समाजों का सत्य है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में तो महिलाओं का शोषण ज्यादा भयावह है क्योंकि यहाँ जाति, वर्ग और जेण्डर(लिंग) का ऐसा आपसी संगुम्फन है जो भारतीय समाज में महिला शोषण की एक विशिष्ट और भिन्न छवि निर्मित करता है। यह ज्यादा क्रूर व भयावह है। जाति आधारित श्रम का लैंगिक विभाजन जहाँ जाति-व्यवस्था को और मजबूत करता है वहीं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नारी विरोधी स्वरूप को भी उद्घाटित करता है।

सफाई का कार्य करने वाले यह (भंगी) दलित महिलायें समाज में एक भीषण अमानवीय जीवन जीने को अभिशप्त हैं। ये आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद इस वर्ण व्यवस्था वाले समाज में कभी भी सर उठाकर सम्मान के साथ नहीं जी पाती। एक तो कार्यस्थल पर ऊँची जातियों के पुरूष उनका शारिरिक शोषण करते है। साथ ही उन्हें अस्पृश्यता की दंश भी झेलना पडता है। अपनी जाति के पुरूषों के बीच अपनी एक स्वतंत्र्य एजेंसी रखने के बावजूद 'इस्मत चुगताई' की कहानी को हाथ में वे श्रम करने वाला को हानि है। इस सम्पूर्ण समाज में अपनी जाति के बाहर रखी इस ऐजेंसी या आर्थिक आत्मनिर्भरता का कोई मतलब नहीं रह जाता।

इतना ही नहीं अम्बेडकर, गांधी, फुले आदि से गुजरते हुए एक लम्बे संघर्ष के फलस्वरूप प्राप्त समता व समानता जैसे मूल्य आज भी इनके लिए अस्तित्व में नहीं हैं।

सफाई कर्मी महिलाओं के जीवन का सबसे विडम्बनापूर्ण क्षण वह होता है जब उनकी ही संतान उन्हें इस बात के लिए कोसती है कि क्या जरूरत थी मैला ढ़ोने की? जबकि मैला

ढोकर ही वह अपने संतान को बडा करती है उसे पढ़ाती-लिखाती है अर्थात इस सम्पूर्ण व्यवस्था में उसके श्रम को रियलाइज नहीं किया जाता । अगर टेक्निकल अर्थों में उसे रियलाइज भी किया जाता है तो सामाजिक सम्मान का भाव उससे नजरअंदाज होता है । कार्यस्थल से लेकर परिवार के भीतर तक सफाई कर्मी महिलायें शोषण का शिकार होती है । शौचालय साफाई का काम करने के अतिरिक्त इनको घर आदि की सफाई भी करनी पडती है ।

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की मूल धारणा यह है कि इस स्तरीकृत समाज में जाति, वर्ग, जेण्डर के आपसी सम्बधों का विश्लेषण सफाई-कर्मी महिलाओं की स्थिति के माध्यम से करते हुए उसके सामाजिक, आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाये । साथ ही हिंसा, यौनिकता, समाज में हो रहे बदलावों के अनुरूप अपने को ढालती पितृसत्ता तथा दलित महिला श्रम के दोहन के लिए इस व्यवस्था द्वारा अपनाये जाने वाले नये-नये रास्तों की पडताल करना भी इस शोध में शामिल है । इस शोध के अंतर्गत दलित नारीवाद की प्रस्थापनाओं के सहारे सफाई कर्मी महिलाओं के दोहरे शोषण को भी रेखांकित करने का प्रयास किया जायेगा। खासकर सफाई-कर्मी पुरुषों द्वारा उनका शोषण।

वर्धा जिले की सफाई कर्मी महिलाओं पर आधारित यह शोध उनकी स्थिति को उनकी समस्याओं को उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता में समझने का प्रयास होगा । इस बात की पडताल करने की कोशिश भी यह शोध करेगा कि क्या कारण है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बावजूद इन महिलाओं के लिए जो स्वतंत्र ऐजेंसी बनती है वह यौनिकता व विवाह के एक खास निश्चित दायरे में ही क्यों बनती है। क्या इसलिए कि यौनिकता में स्वतंत्रता का मामला इन महिलाओं को संपूर्ण पुरूषों द्वारा भोगे जाने के परिप्रेक्ष्य से जुडता है? क्या कारण है कि यह महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता को यौनिकता से अलग क्षेत्रों में महसूस नहीं कर पाती। उन्हें खाना बनाना, कपडे धोना, सास-ससुर की सेवा करना जैसे तमाम कार्य जो एक घरेलू स्त्री या पत्नी के लिये निर्धारित है वे अनिवार्यत: करने ही पडते है। इस पक्ष की पितृसत्तात्मक संरचना व जाति के साथ रिश्ता क्या है, इसको देखने, विश्लेषित करने की कोशिश भी मेरा यह शोध कार्य करेगा।

परिकल्पना :

वैसे तो यह शोध वर्धा जिले की केस स्टडी होगा किन्तु अपनी तर्कों, विश्लेषण व निष्कर्षों में यह श्रम के लैंगिग विभाजन, जाति, वर्ग के साथ उसके सम्बन्धों को समझने के

साथ-साथ सफाई-कर्मी महिलाओं की विशिष्ट सांस्कृतिक स्वरूपों की भी पड़ताल करेगा। इसके निष्कर्ष समूची सफाई कर्मी महिला जाति से जुड़े होंगे।

आरक्षण का इतना लाभ इस समूह को मिला है, या नहीं मिला है या इसके जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन हुए हैं यह देखना मेरे शोध का ध्येय (लक्ष्य, उद्देश्य) होगा।

1) दलित महिलाओं की सामाजिक श्रम में अन्य महिलाओं से हिस्सेदारी अधिक हैं।
2) दलितों में भी खासकर भंगी जाति में वर्णव्यवस्था के तहत इसका प्रचलन अधिक हैं।
3) दलित श्रमिक महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार न के बराबर हुआ है।
4) निरंतर श्रम के बावजूद भी दलित श्रमिक महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार बहुत ही कम हुआ है।
5) पुरुषों की तुलना में दलित श्रमिक महिलाओं की जीवन अत्यंत दयनीय है।
6) दलित श्रमिक महिलाओं के सामाजिक जीवन में पितृसत्ता का प्रभाव दिखाई देता है।
7) दलित श्रमिक महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक जीवन के नारीवादी अध्ययन विश्लेषण की आवश्यकता है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध में इस ब्राह्मणवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में दलित महिला श्रम की अवधारणा, उसके सामाजिक प्रभाव की पड़ताल करेगा। साथ ही यह भी इस शोध का उद्देश्य होगा कि दलित महिला सफाई कर्मियों के अनुभव को योनत्य, विवाह, परिवार जैसे मसलों पर उनकी सोच को सामने लाया जाय। जाति, वर्ग, जेण्डर के आपसी संबध को सफाई कर्मी महिलाओं के माध्यम से समझते हुए सत्ता विमर्श को भी यह शोध विश्लेषित करेगा।

शोध प्रविधि :

नारीवादी शोध प्रविधि अन्य मुख्यधारा के शोध प्रविधि से भिन्न इस मामले में होती है कि मुख्यधारा के अध्ययन में पूर्व मान्यतायें स्थापित और पहले से ही वैद्यता रखती है। नारीवादी अध्ययन की चुनौती यह होती है कि यह उन पूर्वमान्यताओं को विश्लेषित कर उनके वर्चस्ववादी चरित्र को उजागर करें और फिर उसका सामान्यीकरण करें इसलिए किसी भी नारीवादी अध्ययन के लिए यह आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तावित अध्याय :

प्रथम अध्याय : दलित महिला एवं उनका श्रम

(i) दलित महिला की पहचान

(ii) दलित महिला श्रम विभाजन एवं कोटियाँ

(iii) दलित पुरूष श्रम विभाजन

(iv) दलित स्त्री श्रम विभाजन

द्वितीय अध्याय : मैला ढ़ोने की प्रथा

(i) दलित महिला सफाई कर्मी

(ii) महिला श्रम विभाजन सफाई कर्मी

(iii) मैला ढ़ोने की प्रथा का इतिहास : विकास, वर्तमान स्त्री और दलित महिला

तृतीय अध्याय : वर्धा जिले में दलित महिला श्रम का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

(i) वर्धा जिले का परिचय

(ii) भौगालिक राजनैतिक/प्रशानिक

(iii) सांस्कृतिक

(iv) सामाजिक जनसंख्या,

(v) सामाजिक संरचना

(vi) दलित और सर्वण महिला श्रमिकों का अनुपात

चतुर्थ अध्याय : वर्धा जिले में दलित महिला सफाई कर्मियों की स्थिति

(i) आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियों का संश्लिष्ट स्वरूप

उपसंहार

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1) सिंह, भाषा, 'अदृश्य भारत', पेगुइन बुक्स, नई दिल्ली।
2) ठाकुर, अरूण, खडस मुहम्मद, 'नरक सफाई', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली।
3) दास, भगवान,'मैं भंगी हूँ', गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली।
4) बाल्मीकि, ओमप्रकाश,'सफाई की देवता',राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5) वसुधा पत्रिका -58 जुलाई-सितम्बर, 2003।
6) डॉ. लॉरेन्स जास्मिन, 'महिला श्रमिक' अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-110002।
7) कुमार,प्रवेश, 'दलित अस्मिता की राजनीति' मानक पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
8) गुप्ता, रीता, 'महिलाएँ और स्वरोजगार', चेतना प्रकाशन, दिल्ली।
9) गुप्ता, रमणिका, 'मलमूत्र ढोता भारत'।
10) दलित अस्मिता पत्रिका।
11) किशोर, राज, दलित राजनीति की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
12) लिंबाले, शरणकुमार, छुआछूत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
13) वर्तमान संदर्भ पत्रिका -18, अगस्त-अक्टूबर, 2009।

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

एम.फिल. स्त्री अध्ययन उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

शोध शीर्षक

दलित महिला श्रम - सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन

विशेष संदर्भ : सफाई कर्मी महिलाएँ

2012-13

शोध निर्देशिका
प्रो. शंभु गुप्त
विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर
स्त्री अध्ययन विभाग

शोधार्थी
आम्रपाली मेश्राम
एम.फिल. 2012-13
स्त्री अध्ययन विभाग

स्त्री अध्ययन विभाग
संस्कृति विद्यापीठ
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित